छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज

वैदिक क्षत्रिय संघ से नगरधन तक की गौरवशाली परंपरा

> संस्कृति का विकास किसी एक युग या पीढ़ी का कार्य नहीं होता। यह हजारों वर्षों की साधना, परंपरा और अनुभव का परिणाम होता है। जो समाज अपनी संस्कृति को संजोकर रखते हैं, वे समय के हर परिवर्तन में स्थिर रहते हैं, जबकि जो समाज अपनी संस्कृति से विमुख हो जाते हैं, उनका अस्तित्व धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।

हर समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति और सभ्यता होती है, जो उसकी पहचान और अस्तित्व की आधारशिला बनती है। उसी प्रकार छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज की भी अपनी एक अद्वितीय सभ्यता, संस्कृति और जीवन पद्धति है। यह समाज अनेक ऐतिहासिक संकटों, युद्धों और सामाजिक परिवर्तनों से गुजरने के बाद भी अपने प्राचीन अस्तित्व और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए हुए है। आज अत्यंत आवश्यक है कि आने वाली पीढ़ियाँ इस प्राचीन 36 कुलीन संस्कृति, सभ्यता और भाषा की रक्षा करें। समाज के सामने चाहे कितनी भी चुनौतियाँ आएँ, पोवारी भाषा, रीति-रिवाज और सनातनी परंपराओं को जीवित रखना ही इस विरासत की सबसे बड़ी सेवा है।

वैदिक कालीन जड़ें और क्षत्रिय संघ

छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज की जड़ें वैदिक काल के क्षत्रिय संघों से जुड़ी हुई हैं। वैदिक युग में आर्यों में 'क्षत्र संघ' नामक संगठन विद्यमान था, जो शासन, रक्षण और धर्म की मर्यादा के पालन हेतु उत्तरदायी था। यही संघ आगे चलकर अनेक क्षत्रिय कुलों का उद्गम बना। इन संघों के वंशज सप्तसिंधु प्रदेश से मध्य भारत की ओर बढ़े और उज्जयिनी (अवंतिका) तथा मालवा की भूमि को अपना केंद्र बनाया।

मालवा का परमार वंश एवं राजा भोज का युग

इन्हीं प्राचीन क्षत्रियों के एक संघ से वह शाखा विकसित हुई जिसने मालवा में शासन स्थापित किया। इस शाखा को इतिहास में परमार नाम से जाना गया। ‘परमार’ वास्तव में उसी क्षत्रिय संघ की एक प्रमुख वंशीय शाखा थी, जो अपने सामर्थ्य, शासन-कौशल और संस्कृति-निष्ठा के कारण प्रसिद्ध हुई। राजा भोज जैसे परमार नरेशों ने मालवा को ज्ञान, साहित्य, स्थापत्य और सनातन धर्म का केंद्र बनाया।

इसी काल में 36 कुलीन क्षत्रिय संघ की परंपरा भी सुदृढ़ रूप में उभरी। यह संघ केवल राजनीतिक संगठन नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक था। प्रत्येक कुल अपने मर्यादा, धर्म और क्षत्रिय कर्तव्य के पालन में गौरव का विषय था। आगे चलकर यही संघ मध्यकालीन राजपूत संघों का आधार बना, जिनमें परमार वंश का स्थान सर्वोपरि था।

नगरधन में पुनर्संगठन एवं नवीन अध्याय

विदेशी आक्रमणों और सामाजिक उथल-पुथल (upheaval) के समय भी इन क्षत्रिय संघों ने अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखा। इन्हीं संघों की परंपरा में लगभग 325 वर्ष पूर्व छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज ने नगरधन (वर्तमान वैनगंगा क्षेत्र) को

अपने संगठन का केंद्र बनाया। मालवा और राजपूताना से स्थानांतरित होकर यह समाज नगरधन में एक संगठित संघ के रूप में स्थापित हुआ और यहां से इसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का नया अध्याय प्रारंभ हुआ।

नगरधन का यह संगठन केवल एक सामाजिक संस्था नहीं था, बल्कि यह अपने प्राचीन क्षत्रिय वंश, पोवारी भाषा और सनातनी संस्कृति का जीवंत प्रतीक था। यही संघ आगे चलकर अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ के रूप में विकसित हुआ, जो आज इस गौरवशाली परंपरा का संवाहक है।

सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक प्रासंगिकता

छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज का यह इतिहास इस सत्य का प्रमाण है कि यह समाज कोई आधुनिक निर्माण नहीं, बल्कि वैदिक काल से प्रवाहित उस क्षत्रिय चेतना का उत्तराधिकारी है, जिसने धर्म, संस्कृति और संगठन को अपना आधार बनाया। इस समाज ने समय की हर परीक्षा में अपनी भाषा, पहचान और परंपराओं को जीवित रखा।

आज जब सांस्कृतिक पहचान के संकट बढ़ रहे हैं, तब यह समाज अपने इतिहास और परंपरा के संरक्षण का जीवंत उदाहरण है। छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज यह संदेश देता है कि जिसने अपनी संस्कृति और संगठन को संभाल लिया, वही युगों तक अमर रहता है।

सन्दर्भ साहित्य एवं स्रोत

- मध्यभारत में पंवार(पोवार) समाज
- अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ